कबाड़नामा

अंक : 1 दिल्ली के कूड़ा चूनने वालों एवं कबाड़ियों की पत्रिका माह : अक्टूबर-नवम्बर 2005

देखो हमने ग्रुप बनाया

हमें कबाड़ी साथियों को ताकतवर बनानें के लिए ग्रुप बनाएं। उसमें से लीडर चूने, पहले हम ग्रुप ई-ब्लाक में बनाए। इस ग्रुप में कुल 50 आदमी है। ग्रुप बढ़ाने के लिए कम से कम सप्ताहिक 4 मिटिंग करने होंगे, यह उम्मीद है कि 100 से 150 आदमी जुड़ जायेंगे। एफ और बी ब्लाक में यदि हम 4 सप्ताहिक बैठक करें तो 100 कबाड़ी जुड़ सकते हैं इसके लिए मेहनत करना पड़ेगी। युसूफ उर्फ राजा-(गोदाम मालिक हैं गोदाम के बारे में) वही है कि गोदाम जी जगह से यानी मै जहां गोदाम करता हूँ यानी पन्नी कागज उड़कर वाली से थोड़ा पारा होने जाने पर MCD वाले कबाड़ के समान पहले उठा ले जाते है। जबसे महीने का हिस्सा देना तय हुआ है तब से नहीं ले जाते है। बुलड़ोजर वाले भी मुझे तंग करते है। उसको 300 रु. प्रति माह, चलान काटने वाले 200 रु. प्रति माह ले जाते है। देने से माना करने पर धमकी देते हैं। MCD वाले के पास भेजूंगा वहां 500 रु. देने पड़ेंगे ओर उल्टी सीची फीतर भी करते है।

जो कबाड़ी कबाड़ लेकर मेरे दुकान पर आता है उसको मैं खरीदता हूँ। तो पुलिस वाले फसांने के चक्कर में मुझे ही चोर कहते है। असली चोर वो पकड़ते नहीं हम कबाड़ के दुकान वाले को परेशन करते है। और प्रति माह देने पड़ते है।

चिंतन ग्रुप

DDA मुख्यालय पर धरना

धरने में भाग लेते चिंतन के साथी

साझा मंच के नेतृत में मास्टर प्लान के अर्न्तगत काम करने के लिए जगह की मांग और मास्टर प्लान की कमियों के खिलाफ में 6 अक्टूबर 2005 को **DDA** मुख्यालय के समक्ष रैली आयोजित की गई। इस रैली में चिंतन से करीब 500 लोगों ने हिस्सेदारी किया। रैली में हमने मुख्य रूप से काम करने के लिए जगह की मांग की, जो हमारे लिए एक महत्वपूर्ण समस्या है। हम लोगो ने अपने ज्ञापन में मांग किया कि दिल्ली के हर जिला में कूड़े की छंटाई के लिए जगह का प्रावधान होना चाहिए साथ ही जिंदा रहने के लिए निम्नतम सुविधाओं की व्यवस्था भी होनी चाहिए।

कूडा और कबाड़

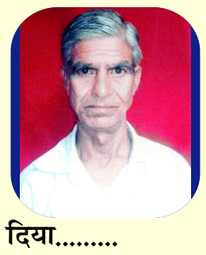

फैंक दिया जिस कूडे को तुमने
हमने उसको साकार किया
भर लिया अपनी बोरी में उसको
जिस को तुमने बेकार किया।। फैंक दिया.....

साफ सुथरा बना देते इस शहर को
प्रयत्न हमने हर बार किया
आधा कुडा ले जाते हैं हम
जरा सोचो कितना उपकार किया।। फैंक दिया.....

चुन बिन कर बेचा कूडे को
जितना दिन भर तैयार किया
सुन्दर बनाया इन सड़को को
ऐसा हमने रोजगार किया।। फैंक दिया.....

हरि सिंह

जीवन का महत्व

सन्तराज मौर्या

जीवन एक कला है,
इसे सुन्दर बनाइए।
जीवन एक खजाना है,
इसकी सुरक्षा कीजिए
जीवन एक गीत है,
इसे गुनगुनाइए।
जीवन एक चुनौती है, इसे स्वीकार कीजिए।
जीवन एक कर्तव्य है, इसे निभाइए।
जीवन एक पाठ है, इससे कुछ सीखिए।
जीवन एक संघर्ष है, इसे विजित कीजिए।
जीवन एक पहेली है, इसे सुलझाइए।
जीवन एक ज्ञान है, इसे एकत्र कीजिए।
जीवन एक तपस्या है, इसमें रम जाइए।
जीवन एक खिलौना है, इसे मत तोड़िए।
जीवन एक किताब है, इसे पढ़िए।

सन्तराज मौर्या

कचरे से रोटी

मैं बचपन में सीमापुरी में अपने माता-पिता के साथ रहता था। मेरा एक छोटा भाई भी था। हम दोनों भाई सेन्ट्रर स्कूल में पढ़ते थे। मेरे घर में आमदनी के इंतजाम कर्त्ता पहले तो सिर्फ और सिर्फ मेरे पिता जी इंतजाम करते थे लेकिन इससे परिवरिश नहीं चली तो मेरे को दुसरों के घरो में चौका बर्तन करने के लिए मजबूर होना पड़ा। मेरे पिता जी एक रिक्शा चालक के साथ-ही-साथ पेशावर शराबी भी थे। इसकी एवज में मेरा परिवार कर्ज में डूब गया। सभी चीजों का इंतजाम कमाई के बदौलत ही होना था।

मै घर में अपने माता-पिता के बड़े संतान होने के नाते फैसला किया कि अब पढ़ाई नहीं कर सकता क्योंकि वक्त की ज़रूरत है कमाई। हमने अपने दोस्त के साथ कबाड़ चुनने के लिए नंद नगरी गया। उस दिन दोनों दोस्तो ने मिलकर 100-100 की कमाई किया। लेकिन सब बगैर सूचना के किया था इसलिए घर में आकर पिटाई भी खानी पड़ी। मजबूरी में काम छोड़कर स्कूल जाना स्वीकार करना पड़ा। लेकिन हालात को बदलने के लिए चोरी से काम को जारी रखा। एक दिन पिता की कमाई हुई नहीं और कर्ज लेने वाला घर पर आकर उलटा-सीधा बोलने लगा तब हमने अपनी कमाई के पैसे से कर्जा वापस किया। मेरे पिता मुझे गोद में लेकर रो पड़े और कहने लगे कि यही काम के लिए मैंने मना किया था आज मेरी लाज बचाई बेटा जो भी करना इमानदारी से करना। मैं कबाड़ रोटी और इज्जत से जीने के लिए चुनता

-दीपक, कोढ़ी कालोनी

-दीपक

चिंतन के बारे में

'चिंतन' एक गैर-सरकारी संस्था है जो 1860 के रजिस्ट्रेशन ऑफ सोसायटी एक्ट के तहत पंजीकृत है तथा जिसकी पंजीकरण संख्या एस-36142 है। चिंतन मुख्यतः पर्यावरण के उत्थान की दिशा में काम करती है।

चिंतन सामाजिक एकता और समान उपभोग अर्थात् उन वस्तुओं के उपभोग एवं आदत को बढ़ावा देता है जो न केवल हमारे स्वास्थ्य बल्कि हमारे पर्यावरण के लिए भी लाभप्रद हो तथा जिसके उपभोग से गरीबों पर भी कोई अतिरिक्त बोझ न बढ़े।

हमारा काम जमीन से जुड़ा हुआ है और अपने अनुभवों के आधार पर ही हम नीतियों के निर्माण की मांग करते हैं। हम समाज के भिन्न-भिन्न वर्गो के साथ परस्पर काम करते हैं तथा अलग-अलग समूहों को जोड़कर उन्हें संगठित करते हैं। साथ ही अन्य सहभागी जैसे-नगरपालिका, कूड़ा चुनने वाले, नीतियां निर्धारित करने वाले, निजी क्षेत्र के प्रबंधकों, कार्यकर्ताओं, स्कूल के बच्चों, चिकित्सकों तथा वैज्ञानिकों के साथ काम करते हैं।

हम मुख्यतः तीन मुद्दों पर काम करते हैं: असंगठित क्षेत्र के पूर्णचक्रणकर्ताओं को संगठित करना, बच्चों तथा वयस्कों को पर्यावरण की शिक्षा देना, तथा पर्यावरणीय स्वास्थ्य का मुद्दा जिसमें हमारा मुख्य जोर महिलाओं और बच्चों पर होता है। इसके अतिरिक्त प्रशिक्षण, शिक्षा एवं जागरूकता, प्रकाशन, वस्तुओं के नये डिजाइन तैयार करना तथा इनका प्रयोग, शोध एवं उनका क्रियान्वयन, अध्ययन तथा कार्यालयों, होटल एवं रस्टोरेंटो में कूड़ा प्रबंधन इत्यादि भी हमारे काम का अन्य हिस्सा है।

रविवार बैठक

आप हमें निम्न पते पर अपने सुझाव एवं लेख भेज सकते हैं : चिंतन, दुसरी मंजिल, 252 सिद्वार्थ इन्कलेव, नई दिल्ली-110014 फोन : 011-26348823-24